विषय सूची

मंगलाचरण	१
(१) सामान्य समीक्षा का समाधान	१
मार्ग के भेद और उनका लक्षण	२
पूर्वपक्ष का कहना और उसका समाधान	२
समीक्षा का मत और उसका सप्रमाण समाधान	३
निमित्तकारण सहायक है इस अपेक्षा से वह भूतार्थ है और उसका समाधान	७
पूर्वपक्ष द्वारा जैनतत्व मीमांसा की मीमांसा में किये गये विधानों का उल्लेख	११
उनका समाधान	१४
पूर्वपक्ष द्वारा उपचार की कथंचित् भूतार्थता का समर्थन और उसका समाधान	२७
मतैक्य के नाम पर चार मुद्दों का समाधान	२७
आरोप और उसका समाधान	२८
(२) शंका १, और १, समीक्षा का समाधान	२९
(३) शंका १, और २, समीक्षा का समाधान	३१
प्रथम भाग के आधार पर समाधान	३१
दोनों प्रकार के बाह्य निमित्तों के लक्षण	३१
पूर्वपक्षों द्वारा किये गये दोनों प्रकार के लक्षण तथा उनका निराकरण	३१
तत्वार्थ सूत्र अ. ५ सू. ७ में स्वप्रत्यय पर्याय धर्मादिक तीन द्रव्यों की विवक्षित है	२५
सब द्रव्यों की परप्रत्यय पर्याय का नयदृष्टि से विचार	२६
जैनतत्व की मीमांसा की रचना का कारण	२६
उपादान अनेक योग्यता वाला होता है इसका निरसन	३५
कार्यों की अपेक्षा बाह्य निमित्तों में भेद नहीं	३६
अर्थविपर्यास	३७
उपसंहार (स. पृ. १८)	३७
कोई भी बाह्य निमित्त होवें अन्य द्रव्यों का कार्य करते ही नहीं	४०
हमने अर्थ करने में भूल नहीं की, आगम का कथन स्पष्ट है	४२
द्वितीय भाग की समीक्षा के आधार पर	४३
तृतीय भाग की समीक्षा के आधार पर	४३
चतुर्थ भाग की समीक्षा के आधार पर	४४
पंचम भाग की समीक्षाके आधार पर	४४
जीव भूतार्थ रूप में पुद्गलों का निमित्तकर्त्ता भी नहीं होता	४४
(४) शंका १, और ३, समीक्षा का समाधान	४५
शंकाकार द्वारा किए गए असमीचीन अर्थ का निराकरण	४६
कालप्रत्यासत्तिवश ही निमित्त में कारण का व्यवहार होता है	४८
प्रेरक निमित्त भूतार्थ रूप से अन्य के कार्य के प्रेरक नहीं	४९
अब थोड़ा कर्मशास्त्र की दृष्टि से भी इस विषय पर विचार कर लिया जाय	५१
प्रेरक कारण के निषेध का दूसरा कारण नियत उपादान से नियत कार्य की स्वीकृति है	५३
हमारा लिखना छलपूर्ण नहीं	५३
बाह्य निमित्त को सहकारी कहना उपचार से ही संभव है	५३
उत्तर प्रश्न के अनुरूप	५७
सूक्ष्म विमर्श का फल	५७
हमारे वक्तव्यों में कोई विरोध नहीं है	५७
अनेक वक्तव्यों पर की गई आपत्तिका समन्वय रूप एक उत्तर	५८
कथन १२ का समाधान	५९

कथन १३ का समाधान ६०
कथन १४ का समाधान ६०
कथन १५ का समाधान ६०
कथन १६ के संबंध में समाधान ६१
कथन १७ का समाधान ६१
कथन १८, १९ का समाधान ६२
कथन २०, २१, २२ का समाधान ६२
कथन २३ का समाधान ६३
अब हम देखें के उक्त गाथा का वास्तविक अर्थ क्या है ६५
हमारे कथन की उपयोगिता ६६
मुख्यता और गौणता विवक्षा में होती है वस्तु में नहीं ६८
कथन २५ का समाधान ६९
कथन २६ का समाधान ६९
कथन २७ का समाधान ७०
कथन २८ का समाधान ७०
कर्मोदय और पुरुषार्थ ७१
कथन २९ का समाधान ७२
कथन ३० का समाधान ७८
कथन ३१ का समाधान ८२
कथन ३२-३३ का समाधान ८४
कथन ३४ का समाधान ८६
कवन ३५ का समाधान ८८
कथन ३६ का समाधान ८८
कथन ३७ का समाधान ८९
कथन ३८ का समाधान ९१
कथन ३९ का समाधान ९२
कथन ४० का समाधान ९२
कथन ४१ का समाधान ९४
कथन ४२ का समाधान ९५
कथन ४३ का समाधान ९५
कथन ४४ का समाधान ९६
कथन ४५ का समाधान ९८
कथन ४६ का समाधान ९९
कथन ४८ का समाधान ९९
कथन ४६ का समाधान १०८
कथन ४७ का समाधान १०९
कथन ४९ का समाधान १११
कथन ५० का समाधान ११२
कथन ५१, ५२, ५३ का समाधान ११२
कथन ५४ का समाधान ११३
कथन ५६ का समाधान ११४
कथन ५६ का समाधान ११४
कथन ५७ का समाधान ११४
कथन ५८ का समाधान ११४
कथन ५९ का समाधान ११५
कथन ६० का समाधान ११५
कथन ६१ से लेकर ६५ तक का समाधान ११६
कथन ६६ का समाधान ११७
कथन ६७ से लेकर ६९ तक का समाधान ११९
कथन ७० का समाधान १२१
कथन ७१-७२ का समाधान १२२
कथन ७३ से लेकर ७६ तक का समाधान १२३
कथन ७७-७८ का समाधान १२४
कथन ७९-८० का समाधान १२६
कथन ८१ का समाधान १२९
कथन ८२ से लेकर ८४ तक का समाधान १३०
कथन ८५ का समाधान १३१
कथन ८६ का समाधान १३२
कथन ८७ का समावान १३५
कथन ८८ का समाधान १३७
कथन ८९-९० का समाधान १३८
कथन ९१-९२ का समाधान १४०
कथन ९३-९४-९५-९६ का समाधान १४१
कथन ९७-९८ का समाधान १४२
कथन ९९ का समाधान १४३
उपसंहार, शंका समाधान १४४
(५) शंका २ की सामान्य समीक्षा का समाधान १४९

शंका २ के पहले दौर की समीक्षा का समाधान १५०
अन्य कथन का समाधान १५१
(६) शंका २ के दूसरे दौर की समीक्षा का समाधान १५१
शंकाकार के विविध कथनों का समाधान १५१
(७) शंका २ के तीसरे दौर की समीक्षा का समाधान १५५
कथन १ का खुलासा १५५
कथन २ का खुलासा १५८
कथन ३ का खुलासा १५९
कथन ४ का समाधान १६०
कथन ५ का समाधान १०६
कथन ६ का समाधान १६१
कथन ७ का समाधान १६१
कथन ८ का समाधान १६४
कथन ९ का समाधान १६५
कथन १० का समाधान १६५
कथन ११ का समाधान १६६
कथन १२ का समाधान १६७
विज्ञेषुकिमधिकम् १६७
कथन १३ का समाधान १६८
कारण-कार्यमात्र का विशेष खुलासा १७१
कथन १४ का समाधान १७६
कथन १५ का समाधान १७७
कथन १६ का समाधान १७८
कथन १७ का समाधान १७८
(८) शंका ३ के पहले दौर की समीक्षा का समाधान १७९
निश्चयधर्म १८०
व्यवहारधर्म के विषय में स्पष्टीकरण १८१
व्यवहारधर्म और दया १८२
(९) शंका ३ के दूसरे दौर की समीक्षा का समाधान १८४
(१०) शंका ३ के तीसरे दौर की समीक्षा का समाधान १८६
प्रतिशंकाओं का समाधान १८७
तीसरे दौर की कई शंकाओं का पुनः समाधान १८९
चतुर्थ दौर की प्रतिशंका 4 का समाधान १९९
रत्नकरण्डश्रावकाचार २००
साध्य-साधकभाव २००
निश्चयधर्म २०१
व्यवहारधर्म २०२
(११) शंका ४ के पहले दौर की समीक्षा का समाधान
उत्तरपक्ष के कथन का सार २०२
(१२) शंका ४ के दूसरे दौर की समीक्षा का समाधान २०४
(१३) शंका ४ के तीसरे दौर की समीक्षा का समाधान २०७
व्यवहारधर्म और निश्चयधर्म २०७